वासवी के चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालें ?

अजातशत्रु नाटक में नायक नायिका के अतिरिक्त कुछ ऐसे चरित्र-प्रधान पात्र हैं, जिन्हें विस्थापित करने की कल्पना मात्र से कथानक आहत हो जाता है। वासवी आलोच्य नाट्य कृति का एक ऐसा ही चरित्र है, जिसके अभाव में नाटक की उद्देश्य पूर्ति सम्भव नहीं लगती। वासवी एक चरित्र-प्रधान पात्र है। वह सम्राट बिम्बसार की बड़ी रानी और युवराज कुणीक की विमाता है। उसके चरित्र में तथागत बुद्ध की करुणा के तन्तु स्पष्ट देखे जा सकते हैं। वह छलना के महत्वाकांक्षा में गृह कलह देखती है, अतः उसे शान्त करने के लिए वह पति को प्रोत्साहित करती है कि वे अजातशत्रु को राज्याधिकार सौंप दे।

वासवी का चरित्र स्थिर चरित्र है, किन्तु अनुकूल और प्रतिकूल स्थितियों में वह एक सी बनी रहती है, जबकि सुख-दुख को वह गम्भीरता से अनुभव करती है। वह एक पतिव्रता नारी है। पति का सुख उसका सुख और पति का दुख उसका दुख है। वह हर स्थिति में पति की प्रतिछाया बनी रहती है। जब सम्राट बिम्बसार बन्दी बना लिए जाते हैं, तो वासवी उन्हीं के साथ रहती है। वह उनकी देखरेख करती है वह एक आर्य पत्नी की भाँति उन्हें निरन्तर धैर्य बंधाती है, उन्हें अधिकार वंचना से पृथक करती है। वह उनको इस बात का अनुभव तक नहीं होने देती कि वे अधिक दुखी हैं। वह कहती है —
"मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपको अधिकार से वंचित होने का दुख नहीं।"

वासवी के चरित्र का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण उसकी सहृदयता है। उसके हृदय में प्रतिहिंसा या प्रतिशोध के बीज कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होते। यही कारण है कि वह अपनी सौत पुत्र अजातशत्रु जिसने उसके पति को गैरवाजिब तरीके से सत्ता से अलग किया तथा दुष्ट-प्रकृति देवदत्त जिसने बहुविध उपद्रव खड़े को क्षमा कर देती है। कथानक के अन्त में वह बिम्बसार से प्रार्थना करती है कि वे छलना और अजात को क्षमा कर दें।

करुणा और सहृदयता के साथ-साथ वासवी में आत्मसम्मान की भावना भी है। वह अपनी अस्मिता पर आँच आते नहीं देख सकती। उसके द्वार पर याचक आये और वह तथा उसका पति अर्थाभाव में दान देने में सक्षम न हों, इसे वह सहन नहीं कर सकती। वह कहती है— "काशी का राज्य मुझे मेरे पिता ने आँचल में दिया है उसकी आय आपके हाथ में आनी चाहिए" वासवी के इस कथन से यह स्पष्ट है कि वह अपनी अस्मिता की रक्षा के प्रति कितनी सजग है। उसकी यह भावना अन्यत्र भी देखी जा सकती है।"

वासवी की आत्मसम्मान की भावना सदैव प्रतिरक्षात्मक ही है, उसमें आक्रामकता नहीं है। वह घमण्ड की सीमा तक नहीं पहुँचती। इसके विपरीत वह एक संयमी और सहनशील स्त्री है। उसकी सहनशीलता हमें कई रूपों में दिखाई देती है। वह छलना के समस्त व्यापारों को सहन कर लेती है। जब छलना अजात की विजय और कौशल नरेश के हार की खबर उसे सुनाती है; तब भी वह दुखी नहीं होती।

वासवी में ममता और मातृत्व का भाव अपने अद्भुत रूप में दिखाई देता है। वह अपनी पुत्री पद्मावती से अधिक प्रेम सौतेपुत्र अजात से करती है। अजात के घायल होकर बन्दी होने का समाचार सुनकर वह पति को छलना के पास दौड़कर अजात की मुक्ति के लिए कौशल जाती है। वह अपने भाई प्रसेनजित से कहती है। "…. भाई! खोल दो। इसे मैं इस तरह देखकर बात नहीं कर सकती। मेरा बच्चा कुणीक।" इसी प्रकार वह छलना से कहती है— "चल-चल तुझे तेरा पति भी दिला दूँ और बच्चा भी।"

अपने इन समस्त स्त्री सुलभ सद्गुणों के साथ-साथ वासवी एक विदुषी महिला भी है। सम्राट के दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर वह विद्वतापूर्ण विवेक के साथ देती है। नाटक के द्वितीय अंक के प्रथम दृश्य की बिम्बसार-वासवी वार्ता वासवी की विद्वता और दार्शनिक मनीषा का परिचय देती है।

बिम्बसार — "और कोमल पत्तियों को, जो अपनी डाली में निरीह लटका करती हैं, प्रभंजन क्यों झिंझोड़ता है ?"

वासवी — "उसकी गति है, वह किसी से कहता नहीं कि तुम मेरे मार्ग में अड़ो; जो साहस करता है उसे हिलना पड़ता है! नाथ! समय भी इसी तरह चला जा रहा है, उसके लिए पहाड़ और पत्ती बराबर हैं।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि वासवी एक पतिपरायण ~~स्त्री~~ पत्नी और ममतामयी माँ के साथ ही साथ एक मानिनी महिला तथा समय ~~के~~ और प्रकृति की गति समझने वाली विदुषी स्त्री है। उसके व्यक्तित्व का वस्त्र जिन रेशों से निर्मित है उसमें तथागत की करुणा के तन्तु प्रधान हैं।

— :XOX: —